जहर

दुनिया में जहर ऐसा कुछ होता ही नहीं है, जैसे अंधेरा होता नहीं है, बिजली का उजाला ना हो तो हम उसको अंधेरा कहते हैं; उसी तरह अगर हम कुछ हजम नहीं कर पाते तो उसे हम जहर कहते हैं.

अगर हमें पता है की एक चीज जहर है और हम उसे जहर समझ कर लेंगे तो वह अपना कर्म करेगी यानी हम शायद बीमार हो जाएंगे या मर जाएंगे.

लेकिन हम उसे जहरही ना माने तो हमें कुछ नहीं होगा. यहां पर मुझे संत मीराबाई की एक जीवन घटना याद आ रही है वही मैं आपके साथ साझा कर रही हूँ.

एक बार मीराबाई को किसी ने जहर का प्याला देकर कहा की यह कृष्ण का प्रसाद है. तभी उसके शुभ-चिंतक ने कहा की 'इसमें जहर है. इसे ना पिए.' इस पर मीराबाई ने उत्तर दिया की जब यह जहर मेरे सामने कृष्ण का प्रसाद बनकर आया तब ही इसमें का जहरीलापन खत्म हो गया और यह सिर्फ प्रसाद रह गया, मैं कृष्ण के प्रसाद को मना कैसे कर सकती हूँ? इसके लिए मैं यह प्रसाद ग्रहण करुंगी और उन्होंने वह जहर को प्राशन किया. बाद में देखा गया की मीरा माई को उस प्रसाद से कोई तकलीफ नहीं हुई. यही है जादू ,भक्ति की भावना का, इसमें जहर का जहरीलापन खत्म करने की क्षमता है . अतः हमें अपनी भावनाको हमेशा सही रखना चाहिए ताकि कोई हमें नुकसान ना पहुँचा सके.

ॐ श्री समर्पयामि! 🙏 !